नं. 1

संजीव®

बुक्स

इतिहास-XII

भारतीय इतिहास के कुछ विषय : भाग-1, 2, 3

(कक्षा 12 के विद्यार्थियों के लिए नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार)

- माध्य. शिक्षा बोर्ड, 2026 के प्रश्न-पत्र का समावेश
- पाठ्यपुस्तक के सभी अभ्यास प्रश्नों का हल
- शिक्षा विभाग, राजस्थान द्वारा जारी प्रश्न बैंक के प्रश्नों का हल सहित समावेश
- सभी प्रकार के अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों का समावेश
- योग्य एवं अनुभवी लेखकों द्वारा लिखित
- प्रथम श्रेणी प्राप्त करने के लिए पूर्ण सामग्री

2027

संजीव प्रकाशन,
जयपुर

मूल्य : ₹ 360/-

- प्रकाशक :

  संजीव प्रकाशन

  धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता,

  जयपुर-3

  email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
  website : www.sanjivprakashan.com

- © प्रकाशकाधीन

- **मूल्य : ₹ 360.00**

- लेजर कम्पोजिंग :

  संजीव प्रकाशन (D.T.P. Department), जयपुर

- मुद्रक :

  पंजाबी प्रेस, जयपुर

  ★★★★★★★

❖ इस पुस्तक में त्रुटियों को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है। किसी भी त्रुटि के पाये जाने पर अथवा किसी भी तरह के सुझाव के लिए आप हमें निम्न पते पर email या पत्र भेजकर सूचित कर सकते हैं–

email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
पता : प्रकाशन विभाग संजीव प्रकाशन
धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर

आपके द्वारा भेजे गये सुझावों से अगला संस्करण और बेहतर हो सकेगा।

❖ इस पुस्तक में प्रकाशित किसी त्रुटि के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए लेखक, प्रकाशक, संपादक तथा मुद्रक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं हैं।

❖ सभी प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र 'जयपुर' होगा।

विषय–सूची

भारतीय इतिहास के कुछ विषय

भाग–1

1. **ईंटें, मनके तथा अस्थियाँ**
   हड़प्पा सभ्यता 1–39

2. **राजा, किसान और नगर**
   आरम्भिक राज्य और अर्थव्यवस्थाएँ
   (लगभग 600 ई.पू. से 600 ईसवी) 40–73

3. **बन्धुत्व, जाति तथा वर्ग**
   आरम्भिक समाज
   (लगभग 600 ई.पू. से 600 ईसवी) 74–103

4. **विचारक, विश्वास और इमारतें**
   सांस्कृतिक विकास
   (लगभग 600 ईसा पूर्व से ईसा संवत् 600 तक) 104–136

भाग–2

5. **यात्रियों के नज़रिए**
   समाज के बारे में उनकी समझ
   (लगभग दसवीं से सत्रहवीं सदी तक) 137–171

6. **भक्ति–सूफी परम्पराएँ**
   धार्मिक विश्वासों में बदलाव और श्रद्धा ग्रंथ
   (लगभग आठवीं से अठारहवीं सदी तक) 172–211

7. **एक साम्राज्य की राजधानी : विजयनगर**
   (लगभग चौदहवीं से सोलहवीं सदी तक) 212–244

8. **किसान, जमींदार और राज्य**
   कृषि समाज और मुगल साम्राज्य
   (लगभग सोलहवीं और सत्रहवीं सदी) 245–282

भाग-3

9. उपनिवेशवाद और देहात
(सरकारी अभिलेखों का अध्ययन) 283–312

10. विद्रोही और राज
(1857 का आन्दोलन और उसके व्याख्यान) 313–337

11. महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आन्दोलन
(सविनय अवज्ञा और उससे आगे) 338–369

12. संविधान का निर्माण
(एक नये युग की शुरुआत) 370–393

मानचित्र सम्बन्धी प्रश्न **394–407**

❑❑❑

उच्च माध्यमिक परीक्षा, 2026

इतिहास
(History)

समय : 3 घण्टे 15 मिनट **पूर्णांक : 80**

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :

(1) परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न-पत्र पर नामांक अनिवार्यत: लिखें।
(2) **सभी** प्रश्न करने अनिवार्य हैं।
(3) प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका में ही लिखें।
(4) जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।
(5) प्रश्न-पत्र के हिन्दी व अंग्रेजी रूपान्तर में किसी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही मानें।
(6) प्रश्न का उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।
(7) प्रश्न संख्या 20 के लिए प्रश्न-पत्र के साथ संलग्न मानचित्र पृथक कर अंकित करके उत्तर-पुस्तिका के साथ संलग्न करें।

खण्ड-'अ' (Section-A)

1. बहुविकल्पी प्रश्न : निम्न प्रश्नों के उत्तर का सही विकल्प चयन कर उत्तर-पुस्तिका में लिखिए।
(Multiple Choice Questions : Answer the following questions by selecting the correct option and write them in the answer sheet.)

(i) प्रयाग प्रशस्ति की रचना किसने की थी? [1]
(अ) कालिदास (ब) शूद्रक (स) विशाखदत्त (द) हरिषेण

(ii) 'देवपुत्र' की उपाधि मुख्यत: किन सम्राटों से संबंधित थी? [1]
(अ) मौर्य (ब) कुषाण (स) सातवाहन (द) गुप्त

(iii) प्राचीन काल में स्त्री का गोत्र विवाह के बाद, सामान्यत: किसका माना जाता था? [1]
(अ) पिता का (ब) पति का (स) माता का (द) गुरु का

(iv) प्राचीन भारत में निम्न में से किस स्थान को 'दशपुर' के नाम से भी जाना जाता था? [1]
(अ) वाराणसी (ब) अयोध्या (स) मथुरा (द) मंदसौर

(v) 'सुत्त पिटक' का सम्बंध निम्न में से किस धर्म से है? [1]
(अ) जैन धर्म (ब) वैदिक धर्म (स) बौद्ध धर्म (द) पारसी धर्म

(vi) यात्रा वृत्तांत 'रिह्ला' किसने लिखा? [1]
(अ) अल-बिरुनी (ब) दूरते बारबोसा (स) इब्न-बतूता (द) पीटर मुंडी

(vii) निम्न में से कौन-सा युग्म सुमेलित नहीं है? [1]

यात्री	देश
(अ) ज्यौं-बैप्टिस्ट तैवर्नियर	फ्रांस
(ब) अल-बिरुनी	स्पेन
(स) इब्न-बतूता	मोरक्को
(द) फ्रांस्वा बर्नीयर	फ्रांस

(viii) अलवार सन्त मुख्य रूप से किस देवता की भक्ति करते थे? [1]
(अ) शिव (ब) विष्णु (स) ब्रह्मा (द) गणेश

(ix) 'आदि ग्रंथ साहब' का संकलन निम्न में से किसने किया? [1]
(अ) गुरु नानक (ब) गुरु अंगद (स) गुरु गोबिन्द सिंह (द) गुरु अर्जन देव

(x) तुंगभद्रा नदी के तट पर निम्न में से कौन-सा साम्राज्य बसा था? [1]
(अ) गुप्त (ब) मौर्य (स) विजयनगर (द) शुंग

(xi) 1565 में निम्न में से कौन-सा युद्ध हुआ था? [1]
(अ) तराइन (ब) पानीपत (स) तालीकोटा (द) हल्दीघाटी

(xii) निम्न में से कौन-सी फसल नई दुनिया से नहीं आई? [1]
(अ) टमाटर (ब) आलू (स) मिर्च (द) गन्ना

(xiii) मुगल काल में पंचायत का मुखिया क्या कहलाता था? [1]
(अ) मुकद्दम (ब) मीर बख्शी (स) सदर-ए-सदर (द) दीवान

(xiv) निम्न में से किसे 'संथालों' की शक्ति का प्रतिनिधि माना जाता है? [1]
(अ) फावड़ा (ब) कुदाल (स) हल (द) हंसिया

(xv) 'दामिन-ए-कोह' किस समुदाय को बसाने के लिए निर्धारित क्षेत्र था? [1]
(अ) पहाड़िया (ब) मुंडा (स) भील (द) संथाल

(xvi) 'इन मेमोरियम' चित्र किसने बनाया? [1]
(अ) थॉमस जोन्स बार्कर (ब) जोसेफ नोएल पेटन (स) जॉन टेनिएल (द) फेलिस बीटो

(xvii) लखनऊ में ब्रिटिश राज ढहने की खबर पर, लोगों ने किसे अपना नेता घोषित किया? [1]
(अ) कुँवर सिंह (ब) नाना साहिब (स) बिरजिस कद्र (द) बहादुर शाह

(xviii) निम्न में से कौन-सी घटना सबसे बाद में हुई? [1]
(अ) प्रथम गोलमेज सम्मेलन (ब) महात्मा गाँधी का भारत आगमन
(स) प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस (द) असहयोग आन्दोलन का प्रारम्भ

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

Fill in the blanks :

(i) विद्वानों ने अनुमान लगाया है कि मोहनजोदड़ो में कुओं की कुल संख्या लगभग..... थी। [1]

(ii) कुछ इतिहासकारों का मानना है कि स्वजनों के बीच हुए युद्ध की स्मृति ही..... का मुख्य कथानक है। [1]

(iii) अल-बिरुनी की कृति..... की भाषा सरल और स्पष्ट है। [1]

(iv) हम्पी के भग्नावशेष 1800 ई. में एक अभियंता तथा पुराविद कर्नल..... द्वारा प्रकाश में लाए गए थे। [1]

(v) स्थायी बंदोबस्त में राजस्व की राशि निश्चित कर दी थी, जो प्रत्येक ..... को अदा करनी होती थी। [1]

(vi) ..... को बंगाल आर्मी की पौधशाला कहा जाता था। [1]

3. अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न : निम्न प्रश्नों के उत्तर एक शब्द अथवा एक पंक्ति में दीजिए।

(Very Short Answer Type Questions : Answer the following questions in **one** word or **one** line.)

(i) चाणक्य किस मौर्य शासक के मंत्री थे? [1]
Chanakya was the minister of which Mauryan ruler?

(ii) पाटलिपुत्र को वर्तमान में क्या कहा जाता है? [1]
What is Pataliputra called at present?

(iii) 'बहुपत्नि' प्रथा क्या थी? [1]
What was the practice of 'Polygamy'?

(iv) सबसे प्राचीन गुफाएँ आजीविक संप्रदाय के लिए किस शासक ने बनवाई? [1]
Which ruler built the oldest caves for the Ajivika sect?

(v) किस विदेशी यात्री ने दारा शिकोह के चिकित्सक के रूप में भी कार्य किया? [1]
Which foreign traveller also worked as the physician of Dara Shikoh?

(vi) शेख मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह किस शहर में है? [1]
In which city is the Dargah of Shaikh Muinuddin Chisthi located?

(vii) विजयनगर साम्राज्य की स्थापना किस वर्ष हुई? [1]
In which year was the Vijayanagara Empire established?

(viii) 'आइन-ए-अकबरी' पुस्तक किसने लिखी? [1]
Who wrote the book 'Ain-i-Akbari'?

(ix) पहाड़िया लोग कौन-सी खेती करते थे? [1]
What farming did the Paharia people do?

(x) 'ये गिलास फल (cherry) एक दिन हमारे ही मुँह में आकर गिरेगा।' यह कथन किस रियासत के बारे में कहा गया है? [1]
'A cherry that will drop into our mouth one day.' This statement is about which kingdom?

(xi) लाल, बाल और पाल के रूप में कौन जाने जाते हैं? [1]
Who are known as Lal, Bal and Pal?

(xii) संविधान सभा के अध्यक्ष कौन थे? [1]
Who was the President of the Constituent Assembly?

खण्ड-'ब' (Section-B)

लघूत्तरात्मक प्रश्न : (उत्तर शब्द सीमा लगभग 50 शब्द)
Short Answer Type Questions : (Answer word limit approx. **50** words)

4. सिन्धु घाटी सभ्यता में बाट का उपयोग किस उद्देश्य से किया जाता था? परीक्षण कीजिए। [2]
For what purposes were weights used in the Indus Valley Civilization? Examine.

5. मगध महाजनपद के पास कौन-से प्राकृतिक संसाधन उपलब्ध थे? किन्हीं दो का उल्लेख कीजिए। [1+1=2]
What natural resources were available to the Magadha Mahajanpada? Mention any two.

6. अक्षत्रिय राजाओं के दो उदाहरण दीजिए। [1+1=2]
Give two examples of Non-Kshatriya Kings.

7. स्तूपों की संरचना से संबंधित कोई दो महत्त्वपूर्ण भागों के नाम लिखिए। [1+1=2]
Write the names of any two important parts related to the structure of stupas.

8. इब्न-बतूता के विवरण से भारतीय डाक प्रणाली के बारे में प्राप्त होने वाली कोई दो जानकारियाँ लिखिए। [1+1=2]
Write any two information about the Indian postal system that can be obtained from Ibn-Battuta's description.

9. विजयनगर साम्राज्य द्वारा जल संपदा को सुरक्षित रखने हेतु क्या प्रयास किए गए? [2]
What efforts were made by the Vijayanagara Empire to preserve water resources?

10. सूर्यास्त विधि (कानून) का परीक्षण कीजिए। [2]
Examine the sunset law.

11. 1857 के विद्रोह के दौरान फैली किसी एक अफवाह का उल्लेख कीजिए। [2]
Mention any one rumour that spread during the revolt of 1857.

12. दांडी यात्रा कब और कहाँ से शुरू हुई? [1+1=2]
When and where did the Dandi March Start?

13. संविधान सभा ने कौन-से कर राज्य सरकार के लिए आरक्षित करने का सुझाव दिया? [2]
Which taxes did the Constituent Assembly suggest to be reserved for the State Government?

खण्ड-'स' (Section-C)

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न : (उत्तर शब्द सीमा लगभग 100 शब्द)
Long Answer Type Questions : (Answer word limit approx. **100** words)

14. जैन धर्म के पंच महाव्रत व्यक्ति के चरित्र निर्माण में कैसे सहायक होते हैं? उदाहरण सहित समझाइये। [3]
How do the five great vows of Jainism help in building a person's character? Explain with example.

अथवा/OR

बौद्ध प्रतीक-स्तूप, चक्र, वृक्ष आदि मूर्तिकला में इतने महत्त्वपूर्ण क्यों माने गए हैं? उदाहरण सहित समझाइये।

Why were Buddhist symbols–stupas, chakras, trees, etc. considered so important in sculpture? Explain with example.

15. मुगल काल में उगाई जाने वाली फसलों का वर्णन कीजिए। [3]
Describe the crops grown during the Mughal period.

अथवा/OR

मुगल काल में प्रचलित सिंचाई तकनीकों का वर्णन कीजिए।
Describe the irrigation techniques prevalent during the Mughal period.

16. असहयोग आन्दोलन शांति की दृष्टि से नकारात्मक किन्तु प्रभाव की दृष्टि से बहुत सकारात्मक था। कथन की व्याख्या कीजिए। [3]
The non-cooperation movement was negative enough to be peaceful but positive enough to be effective. Explain the statement.

अथवा/OR

1922 तक गाँधीजी ने भारतीय राष्ट्रवाद को परिवर्तित कर दिया। कथन की व्याख्या कीजिए।
By 1922 Gandhiji had transformed Indian nationalism. Explain the statement.

17. संविधान सभा में हुई चर्चाएँ जनमत से कैसे प्रभावित होती थी? [3]
How were the discussions in the Constituent Assembly influenced by public opinion?

अथवा/OR

संविधान सभा में आदिवासियों की सुरक्षा को लेकर किस प्रकार की चर्चाएँ हुईं?
What kind of discussions took place in the Constituent Assembly regarding the protection of tribals?

खण्ड-'द' (Section-D)

निबन्धात्मक प्रश्न : (उत्तर शब्द सीमा लगभग 250 शब्द)

Essay Type Questions : (Answer word limit approx. **250** words)

18. सिन्धु घाटी सभ्यता के नगर नियोजन से उस समय के लोगों की जीवन शैली और बुद्धिमत्ता का क्या पता चलता है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। [4]
What does the city planning of the Indus Valley Civilization reveal about the lifestyle and intelligence of the people of that time? Explain with examples.

अथवा/OR

सिन्धु घाटी सभ्यता के शिल्प उत्पादन से उस समय के आर्थिक और सामाजिक जीवन की झलक कैसे मिलती है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
How does the craft production of the Indus Valley Civilization provide a glimpse into the economic and social life of that time? Explain with examples.

19. कबीर की बानी की व्याख्या कीजिए। [4]
Explain the verses of Kabir.

अथवा/OR

सूफी और राज्य के संबंधों की व्याख्या कीजिए।
Explain the relationship between Sufis and the State.

20. भारत के रेखा-मानचित्र में निम्नलिखित ऐतिहासिक स्थलों को अंकित कीजिए : [1+1+1+1=4]
(अ) राखीगढ़ी (ब) सारनाथ (स) अहमदाबाद (द) मद्रास
Mark the following historical places in the outline map of India :
(a) Rakhigarhi (b) Sarnath (c) Ahmedabad (d) Madras

अथवा/OR

भारत के रेखा-मानचित्र में निम्नलिखित ऐतिहासिक स्थलों को अंकित कीजिए :
(अ) लोथल (ब) मथुरा (स) ग्वालियर (द) पूना
Mark the following historical places in the outline map of India :
(a) Lothal (b) Mathura (c) Gwalior (d) Pune

इतिहास कक्षा-XII

भारतीय इतिहास के कुछ विषय : भाग-1

1. ईंटें, मनके तथा अस्थियाँ

हड़प्पा सभ्यता

पाठ-सार

1. हड़प्पा सभ्यता—सिन्धु घाटी सभ्यता को हड़प्पा संस्कृति भी कहा जाता है। इस सभ्यता का नामकरण, हड़प्पा नामक स्थान के नाम पर किया गया है, जहाँ यह संस्कृति पहली बार खोजी गई थी। हड़प्पा सभ्यता का काल निर्धारण लगभग 2600 और 1900 ईसा पूर्व के बीच किया गया है। इस क्षेत्र में इस सभ्यता से पहले और बाद में भी संस्कृतियाँ अस्तित्व में थीं, जिन्हें क्रमशः आरम्भिक तथा परवर्ती हड़प्पा कहा जाता है। इन संस्कृतियों से हड़प्पा सभ्यता को अलग करने के लिए कभी-कभी इसे विकसित हड़प्पा संस्कृति भी कहा जाता है।

2. आरम्भिक हड़प्पा संस्कृतियाँ—इस क्षेत्र में विकसित हड़प्पा से पहले भी कई संस्कृतियाँ अस्तित्व में थीं। ये संस्कृतियाँ अपनी विशिष्ट मृदभाण्ड शैली से सम्बद्ध थीं। इसके संदर्भ में हमें कृषि, पशुपालन तथा कुछ शिल्पकारी के साक्ष्य भी मिलते हैं।

3. निर्वाह के तरीके—विकसित हड़प्पा संस्कृति कुछ ऐसे स्थानों पर पनपी जहाँ पहले आरम्भिक हड़प्पा संस्कृतियाँ अस्तित्व में थीं। हड़प्पा सभ्यता के निवासी कई प्रकार के पेड़-पौधों से प्राप्त उत्पाद तथा जानवरों से प्राप्त भोजन करते थे। ये लोग गेहूँ, जौ, दाल, सफेद चना, तिल, बाजरा, चावल आदि का सेवन करते थे। ये लोग भेड़, बकरी, भैंस तथा सूअर के मांस का भी सेवन करते थे। हड़प्पा स्थलों से भेड़, बकरी, भैंस, सूअर आदि जानवरों की हड्डियाँ प्राप्त हुई हैं। ये मछली का भी सेवन करते थे।

4. कृषि प्रौद्योगिकी—हड़प्पा-निवासी बैल से परिचित थे। पुरातत्वविदों की मान्यता है कि खेत जोतने के लिए बैलों का प्रयोग होता था। चोलिस्तान के कई स्थलों तथा बनावली (हरियाणा) से मिट्टी से बने हल के प्रतिरूप मिले हैं। कालीबंगन नामक स्थान पर जुते हुए खेत का साक्ष्य मिला है। कुछ पुरातत्वविदों के अनुसार हड़प्पा सभ्यता के लोग लकड़ी के हत्थों में बिठाए गए पत्थर के फलकों तथा धातु के औजारों का प्रयोग करते थे।

5. मोहनजोदड़ो : एक नियोजित शहर—मोहनजोदड़ो बस्ती दो भागों में विभाजित है—एक छोटा परन्तु ऊँचाई पर बनाया गया और दूसरा अधिक बड़ा परन्तु नीचे बनाया गया। पुरातत्वविदों ने इन्हें क्रमशः दुर्ग और निचला शहर का नाम दिया है। दुर्ग को दीवार से घेरा गया था, जिसका अर्थ है कि इसे निचले शहर से अलग किया गया था। मोहनजोदड़ो का दूसरा भाग निचला शहर था, इसे भी दीवार से घेरा गया था। यहाँ कई भवनों को ऊँचे चबूतरों पर बनाया गया था जो नींव का कार्य करते थे। पहले बस्ती का नियोजन किया गया था, फिर उसके अनुसार उसका कार्यान्वयन किया गया था। ईंटें एक निश्चित अनुपात में होती थीं। ये धूप में सुखाकर अथवा भट्टी में पकाकर बनाई गई थीं।

6. नालों का निर्माण—सड़कों या गलियों को लगभग एक 'ग्रिड' पद्धति में बनाया गया था। ऐसा प्रतीत होता है कि पहले नालियों के साथ गलियों को बनाया गया था और फिर उनके अगल-बगल आवासों का निर्माण किया गया था। घरों के गन्दे पानी को गलियों की नालियों से जोड़ा गया था। हर आवास गली में नालियों का निर्माण किया गया था। मुख्य नाले ईंटों से बने थे और उन्हें ईंटों से ढका गया था।

7. गृह स्थापत्य—मोहनजोदड़ो का निचला शहर आवासीय भवनों के उदाहरण प्रस्तुत करता है। कई भवन एक आँगन पर केन्द्रित थे जिसके चारों ओर कमरे बने थे। आँगन खाना पकाने और कताई करने जैसी गतिविधियों का केन्द्र

था। प्रत्येक मकान में एक स्नानघर होता था। कई मकानों में कुएँ थे। मोहनजोदड़ो में लगभग 700 कुएँ थे। मकानों में भूमि तल पर बनी दीवारों में खिड़कियाँ नहीं थीं।

8. दुर्ग–मोहनजोदड़ो में दुर्ग पर अनेक संरचनाएँ थीं जिनमें माल गोदाम तथा विशाल स्नानागार उल्लेखनीय हैं। माल गोदाम एक ऐसी विशाल संरचना है जिसके ईंटों से बने केवल निचले हिस्से शेष हैं। विशाल स्नानागार आँगन में बना एक आयताकार जलाशय है जो चारों ओर से एक गलियारे से घिरा हुआ है। जलाशय के तल तक जाने के लिए दो सीढ़ियाँ बनी हुई थीं। इसके उत्तर में एक छोटी संरचना थी जिसमें आठ स्नानागार बने हुए थे।

9. शवाधान–सामान्यतया मृतकों को गर्तों में दफनाया जाता था। मृतकों के साथ मृदभाण्ड, आभूषण, शंख के छल्ले, तांबे के दर्पण आदि वस्तुएँ भी दफनाई जाती थीं।

10. विलासिता की वस्तुओं की खोज–फयॉन्स (घिसी हुई रेत अथवा बालू तथा रंग और चिपचिपे पदार्थ के मिश्रण को पकाकर बनाया गया पदार्थ) के छोटे पात्र सम्भवत: कीमती माने जाते थे क्योंकि इन्हें बनाना कठिन था। महंगे पदार्थों से बनी दुर्लभ वस्तुएँ सामान्यत: मोहनजोदड़ो और हड़प्पा जैसी बड़ी बस्तियों में ही मिलती हैं, छोटी बस्तियों में ये विरले ही मिलती हैं।

11. शिल्प-उत्पादन के विषय में जानकारी–चन्हूदड़ो नामक बस्ती पूरी तरह से शिल्प-उत्पादन में लगी हुई थी। शिल्प कार्यों में मनके बनाना, शंख की कटाई, धातुकर्म, मुहर निर्माण तथा बाट बनाना सम्मिलित थे। मनके, कार्नीलियन, जैस्पर, स्फटिक, क्वार्ट्ज, सेलखड़ी जैसे पत्थर, ताँबा, काँसा तथा सोने जैसी धातुओं, शंख, फयॉन्स और पकी मिट्टी आदि से बनाए जाते थे। नागेश्वर तथा बालाकोट शंख से बनी हुई वस्तुओं के प्रसिद्ध केन्द्र थे। यहाँ शंख से चूड़ियाँ, करछियाँ, पच्चीकारी की वस्तुएँ बनाई जाती थीं।

12. उत्पादन केन्द्रों की पहचान–शिल्प-उत्पादन में केन्द्रों की पहचान के लिए पुरातत्वविद सामान्यत: इन चीजों को ढूँढ़ते हैं–प्रस्तर पिंड, पूरे शंख, ताँबा–अयस्क जैसा कच्चा माल, औजार, अपूर्ण वस्तुएँ, त्याग दिया गया माल तथा कूड़ा-करकट।

13. माल प्राप्त करने सम्बन्धी नीतियाँ–बैलगाड़ियाँ सामान तथा लोगों के लिए स्थलमार्गों द्वारा परिवहन का एक महत्त्वपूर्ण साधन थीं। सिन्धु नदी तथा इसकी उपनदियों के आस-पास बने नदी-मार्गों और तटीय मार्गों का भी प्रयोग किया जाता था।

14. उपमहाद्वीप तथा उसके आगे से आने वाला माल–नागेश्वर तथा बालाकोट से शंख प्राप्त किये जाते थे। नीले रंग का कीमती पत्थर लाजवर्द मणि को शोर्तुघई (सुदूर अफगानिस्तान) से, कार्नीलियन गुजरात में स्थित भड़ौच से, सेलखड़ी दक्षिणी राजस्थान तथा उत्तरी गुजरात से और धातु राजस्थान से मंगाई जाती थी। लोथल इनके स्रोतों के निकट स्थित था। राजस्थान के खेतड़ी अँचल (ताँबे के लिए) तथा दक्षिणी भारत (सोने के लिए) जैसे क्षेत्रों में अभियान भेजे जाते थे।

15. सुदूर क्षेत्रों से सम्पर्क–पुरातात्विक खोजों से पता चलता है कि ताँबा सम्भवत: अरब प्रायद्वीप के दक्षिण-पश्चिमी छोर पर स्थित ओमान से भी लाया जाता था। मेसोपोटामिया के लेख से ज्ञात होता है कि कार्नीलियन, लाजवर्द मणि, ताँबा, सोना आदि मेलुहा से प्राप्त किये जाते थे।

16. मुहरें और मुद्रांकन–मुहरों और मुद्रांकनों का प्रयोग लम्बी दूरी के सम्पर्कों को सुविधाजनक बनाने के लिए होता था।

17. एक रहस्यमय लिपि–हड़प्पाई मुहरों पर कुछ लिखा हुआ है जो सम्भवत: मालिक के नाम और पदवी को दर्शाता है। यह लिपि आज तक पढ़ी नहीं जा सकी है। सम्भवत: यह लिपि दायीं से बायीं ओर लिखी जाती थी।

18. बाट–विनिमय बाटों की एक सूक्ष्म या परिशुद्ध प्रणाली द्वारा नियन्त्रित थे। ये सामान्यतया घनाकार होते थे। इन बाटों के निचले मानदंड द्विआधारी (1, 2, 4, 8, 16, 32 इत्यादि 12,800 तक) थे जबकि ऊपरी मानदंड दशमलव प्रणाली का अनुसरण करते थे। छोटे बाटों का प्रयोग सम्भवत: आभूषणों और मनकों को तौलने के लिए किया जाता था।

19. प्राचीन सत्ता–हड़प्पाई पुरावस्तुओं में जैसे–मुहरों, बाटों, ईंटों आदि में एकरूपता थी। बस्तियाँ विशेष स्थानों पर आवश्यकतानुसार स्थापित की गई थीं। इन सभी क्रियाकलापों को कोई राजनीतिक सत्ता संगठित करती थी।

20. प्रासाद तथा शासक–कुछ पुरातत्वविदों का मत है कि मोहनजोदड़ो में मिला एक विशाल भवन एक राज-प्रासाद ही है। कुछ पुरातत्वविदों की मान्यता है कि हड़प्पाई समाज में शासक नहीं थे तथा सभी की सामाजिक

स्थिति समान थी। कुछ पुरातत्वविदों के अनुसार यहाँ कई शासक थे। कुछ लोग यह तर्क देते हैं कि यह एक ही राज्य था।

21. हड़प्पा सभ्यता का अन्त—लगभग 1800 ईसा पूर्व तक चोलिस्तान जैसे क्षेत्रों में अधिकांश विकसित हड़प्पा स्थलों को त्याग दिया गया था। सम्भवत: उत्तरी हड़प्पा के क्षेत्र 1900 ईसा पूर्व के बाद भी अस्तित्व में रहे। हड़प्पा सभ्यता के पतन के कारण थे-(1) जलवायु परिवर्तन (2) वनों की कटाई (3) भीषण बाढ़ (4) नदियों का सूख जाना (5) नदियों का मार्ग बदल लेना (6) भूमि का अत्यधिक उपयोग (7) सुदृढ़ एकीकरण के तत्त्व का अन्त होना।

22. हड़प्पा सभ्यता की खोज—जब हड़प्पा सभ्यता के शहर नष्ट हो गए तो लोग धीरे-धीरे उनके विषय में सब कुछ भूल गए। परन्तु बीसवीं शताब्दी के आरम्भिक दशकों में पुरातत्त्वविदों ने हड़प्पा में मुहरें खोज निकालीं जो निश्चित रूप से आरम्भिक ऐतिहासिक स्तरों से कहीं अधिक प्राचीन स्तरों से सम्बद्ध थीं एवं इनके महत्त्व को समझा जाने लगा।

23. कनिंघम का भ्रम—भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण के प्रथम डायरेक्टर जनरल कनिंघम ने उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में पुरातात्त्विक उत्खनन आरम्भ किए, तब पुरातत्त्वविद् अपने अन्वेषणों के मार्गदर्शन के लिए लिखित स्रोतों (साहित्य तथा अभिलेख) का प्रयोग अधिक पसन्द करते थे। हड़प्पा जैसा पुरास्थल कनिंघम के अन्वेषण के ढाँचे में उपयुक्त नहीं बैठता था। कनिंघम समझ नहीं पाए कि ये पुरावस्तुएँ कितनी प्राचीन थीं।

24. एक नवीन प्राचीन सभ्यता—बीसवीं शताब्दी के आरम्भिक दशकों में दयाराम साहनी ने हड़प्पा में कुछ मुहरों की खोज की। राखालदास बनर्जी ने मोहनजोदड़ो से कुछ मुहरें खोज निकालीं। खोजों के आधार पर 1924 में भारतीय पुरातात्त्विक सर्वेक्षण के डायरेक्टर जनरल जॉन मार्शल ने पूरे विश्व के समक्ष सिन्धु घाटी में एक नवीन सभ्यता की खोज की घोषणा की।

25. नई तकनीकें तथा प्रश्न—हड़प्पा सभ्यता के प्रमुख स्थल अब पाकिस्तान के क्षेत्र में हैं। इसी कारण से भारतीय पुरातत्वविदों ने भारत में पुरास्थलों को चिह्नित करने का प्रयास किया। कच्छ में हुए व्यापक सर्वेक्षणों से कई हड़प्पा बस्तियाँ प्रकाश में आईं तथा पंजाब और हरियाणा में किए गए अन्वेषणों से हड़प्पा स्थलों की सूची में कई नाम और जुड़ गए हैं। कालीबंगन, लोथल, राखीगढ़ी, धौलावीरा की खोज इन्हीं प्रयासों का हिस्सा हैं। 1980 के दशक से हड़प्पा और मोहनजोदड़ो में उपमहाद्वीप के तथा विदेशी विशेषज्ञ संयुक्त रूप से कार्य करते रहे हैं।

26. अतीत को जोड़कर पूरा करने की समस्याएँ—मृदभाण्ड, औजार, आभूषण, घरेलू सामान आदि भौतिक साक्ष्यों से हड़प्पा सभ्यता के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

27. खोजों का वर्गीकरण—वर्गीकरण का एक सामान्य सिद्धान्त प्रयुक्त पदार्थों जैसे-पत्थर, मिट्टी, धातु, अस्थि, हाथीदाँत आदि के सम्बन्ध में होता है। दूसरा सिद्धान्त उनकी उपयोगिता के आधार पर होता है। कभी-कभी पुरातत्वविदों को अप्रत्यक्ष साक्ष्यों का सहारा लेना पड़ता है। पुरातत्वविदों को संदर्भ की रूपरेखाओं को विकसित करना पड़ता है।

28. व्याख्या की समस्याएँ—पुरातात्विक व्याख्या की समस्याएँ सम्भवत: सबसे अधिक धार्मिक प्रथाओं के पुनर्निर्माण के प्रयासों में सामने आती हैं। कुछ वस्तुएँ धार्मिक महत्त्व की होती थीं। इनमें आभूषणों से लदी हुई नारी मृण्मूर्तियाँ शामिल हैं। इन्हें मातृदेवी की संज्ञा दी गई है। कुछ मुहरों पर पेड़-पौधे उत्कीर्ण हैं। ये प्रकृति की पूजा के संकेत देते हैं। कुछ मुहरों पर एक व्यक्ति योगी की मुद्रा में बैठा दिखाया गया है। उसे 'आद्य शिव' की संज्ञा दी गई है। पत्थर की शंक्वाकार वस्तुओं को लिंग के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

कालरेखा 1
आरम्भिक भारतीय पुरातत्व के प्रमुख कालखंड

20 लाख वर्ष (वर्तमान से पूर्व)	निम्न पुरापाषाण
80,000	मध्य पुरापाषाण
35,000	उच्च पुरापाषाण

12,000	मध्य पाषाण
10,000	नवपाषाण (आरम्भिक कृषक तथा पशुपालक)
6,000	ताम्रपाषाण (ताँबे का पहली बार प्रयोग)
2600 ई. पूर्व	हड़प्पा सभ्यता
1000 ई. पूर्व	आरम्भिक लौहकाल, महापाषाण शवाधान
600 ई. पूर्व–400 ई. पूर्व	आरम्भिक ऐतिहासिक काल
सभी तिथियाँ अनुमानित हैं। इसके अतिरिक्त उपमहाद्वीप के अलग-अलग भागों में हुए विकास की प्रक्रिया में व्यापक विविधताएँ हैं। यहाँ दी गईं तिथियाँ हर चरण के प्राचीनतम साक्ष्य को इंगित करती हैं।	

कालरेखा 2
हड़प्पाई पुरातत्व के विकास के प्रमुख चरण

उन्नीसवीं शताब्दी	
1875	हड़प्पाई मुहर पर कनिंघम की रिपोर्ट
बीसवीं शताब्दी	
1921	माधो स्वरूप वत्स द्वारा हड़प्पा में उत्खननों का आरम्भ
1922	मोहनजोदड़ो में उत्खननों का प्रारम्भ
1946	आर.ई.एम. व्हीलर द्वारा हड़प्पा में उत्खनन
1955	एस.आर. राव द्वारा लोथल में खुदाई का आरम्भ
1960	बी.बी. लाल तथा बी.के. थापर के नेतृत्व में कालीबंगन में उत्खननों का आरम्भ
1974	एम.आर. मुगल द्वारा बहावलपुर में अन्वेषणों का आरम्भ
1980	जर्मन-इतालवी संयुक्त दल द्वारा मोहनजोदड़ो में सतह-अन्वेषणों का आरम्भ
1986	अमरीकी दल द्वारा हड़प्पा में उत्खननों का आरम्भ
1990	आर.एस. बिष्ट द्वारा धौलावीरा में उत्खननों का आरम्भ

पाठगत प्रश्न

पृष्ठ संख्या 4

प्रश्न 1. क्या आपको लगता है कि इन औजारों का प्रयोग फसल कटाई के लिए किया जाता होगा?

उत्तर–पुरातत्वविदों ने फसलों की कटाई के लिए प्रयुक्त औजारों को पहचानने का प्रयास भी किया है। इसके लिए हड़प्पा सभ्यता के लोग लकड़ी के हत्थों में बिठाए गए पत्थर के फलकों का प्रयोग करते थे या फिर वे धातु के औजारों का प्रयोग करते होंगे। इन औजारों को देखने से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि इनका प्रयोग फसलों की कटाई के लिए किया जाता होगा।

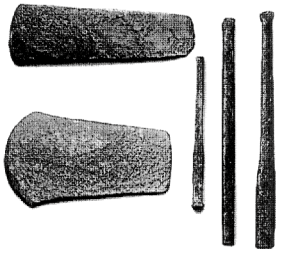

चित्र : धातु के औज़ार

पृष्ठ संख्या 4 : चर्चा कीजिए

प्रश्न 2. आहार सम्बन्धी आदतों को जानने के लिए पुरातत्वविद किन साक्ष्यों का इस्तेमाल करते हैं ?

उत्तर–आहार सम्बन्धी आदतों को जानने के लिए पुरातत्वविद निम्नलिखित साक्ष्यों का प्रयोग करते हैं—

(1) जले अनाज के दानों तथा बीजों की खोज– जले अनाज के दानों तथा बीजों की खोज से पुरातत्वविद आहार सम्बन्धी आदतों के विषय में जानकारी प्राप्त करते हैं। इनका अध्ययन पुरा-वनस्पतिज्ञ करते हैं जो प्राचीन वनस्पति के अध्ययन के विशेषज्ञ होते हैं। अनाज के दानों में गेहूँ, जौ, दाल, सफेद चना तथा तिल शामिल हैं। बाजरे के दाने गुजरात के स्थलों से प्राप्त हुए थे।

(2) जानवरों की हड्डियाँ–हड़प्पा-स्थलों से मिली जानवरों की हड्डियों में पशुओं (भेड़, बकरी, भैंस तथा